अभिशप्त जीवन

पुष्पा विवेक
मो. 9278944156

यह कहानी आज से पचास-पचपन साल पहले की घटना पर आधारित है जब उत्पीड़ित समाज में खासतौर से महिलाओं के लिए न तो शिक्षा को जरूरी समझा जाता था और न ही शिक्षा के प्रति अछूतों का कोई रुझान था। देश आजाद हो गया था लेकिन महिलाओं को इतनी आजादी नहीं थी कि घर से बाहर क्या घर की देहरी पर भी बैठ सकें। शादीशुदा महिलाएं घूँघट में रहतीं थी उन्हें ससुराल में अपने बड़ों के सामने बोलने की इजाजत नहीं थी। रोजगार के नाम पर पैतृक काम ही विरासत में मिलते थे या अंग्रेजों की फौज में लड़ने के लिए भेज दिया जाता था। कारखाने और फैक्ट्रियां भी आज की तरह बशुमार नहीं थीं। घरों में ही छोटे-छोटे लघु उद्योगों से जुड़कर अपनी आय अर्जित करते थे। इसी कड़ी में चुन्नी लाल का परिवार भी आता है। वे अनुसूचित जाति से संबंध रखते थे। परिवार में माता-पिता के अलावा बड़ा भाई कंचन, बीच वाला भाई मंगल और चुन्नी लाल परिवार में सबसे छोटा था। बड़े भाई की पढ़ने में रुचि थी लेकिन चुन्नी की पढ़ने में कोई रुचि नहीं थी, पिता राज मिस्त्री का काम करते थे लेकिन अस्थमा की बीमारी होने के कारण ज्यादातर घर में ही रहते इसीलिए रामबती ने उन्हें पान-बीड़ी की दुकान खोल कर दे दी। बड़ा भाई कंचन परिवार की मजबूरी समझता था और पढ़ने में भी होशियार था इसलिए उन्होंने एक मिशनरी स्कूल में दाखिला ले लिया। पढ़ाई के साथ-साथ वे घर में परिवार की मदद भी करते, कभी अपने पिता के पास पान-बीड़ी की दुकान पर जा बैठते कभी माँ मंडी से सब्जी लाकर बेचती, कभी गेंहू का चालीस पचास किलो का पोटला सिर पर रखकर अंग्रेजी सेना से बचते बचाते लाकर बस्ती में बेचती। माँ रामबती के साथ कंचन उनकी मदद करते, दूसरे नंबर का मंगल पागल, दोनों हाथों से अपाहिज और गूंगा था, जिसकी खाना खिलाने से लेकर नहलाने-धुलाने तक की सारी जिम्मेदारी रामबती की थी। इसी माहौल में चुन्नी लाल की परवरिश हुई। सबसे छोटा, लाड़ला, पिता बीमार, माँ का घर के कामों के साथ-साथ आर्थिक उपार्जन के लिए व्यस्त रहने के कारण चुन्नी लाल बस्ती के दूसरे बच्चों के साथ कंचे खेलना, गुल्ली डंडा, कसरत जैसे शौक उसकी दिनचर्या का हिस्सा थे और कंचन अपनी और परिवार की

जिम्मेदारियों को बखूबी समझते थे। कभी-कभी तो खाने के लिए रोटी न होने पर चने खाकर ही गुजारा करना पड़ता था। कभी पढ़ाई के साथ-साथ हाथ की कमानी-बरमा से लकड़ी की फंटी में छेद कर ब्रुश बनाने के लिए तैयार करते। इन्हीं परिस्थितियों से जूझते हुए कंचन ने हाई स्कूल की परीक्षा पास की।

हाई स्कूल करते ही माँ को बेटे की शादी की चिंता सताने लगी। कंचन ने मना भी किया, 'अम्मा अभी मोए पढ़ नोएं, जब मैं काम पे जाबे लगूंगो तभी शादी करूंगों। तब तक घर में कछु सामान सट्टो भी जुड़ जायगो। रामबती मईया मैं काम पे जातु पीछे तै घर समारवे वारो ता कोई होए। तैरो ब्याओ है जायेगो तो मोउए कछु सहारो है जायेगो। बहु आइके घर संभाल लैगी तो मौऊए कछु राहत मिल जायेगी। अपनी जिम्मेदारिन ते मैं बेफिकर है के बाहर जा सकत हूं।' लेकिन कंचन अभी और पढ़ना चाहते थे और जब तक आमदनी का कोई जरिया नहीं बनता, वह शादी करने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन रामबती भी कहां मानने वाली थी। वह बार-बार कंचन को टोकती रहती, 'भईया तेरे बाप बीमार रहतएं उनके सामने तैरो ब्या है जायेगो तो उनकी आत्मा कूं भी चैन मिल जायेगो, मैं काम के चक्कर में ज्यादातर घर तै भार रहतं, बऊ आ जायेगी तो मोउए कछु सहारो हे जायेगो।' रामबती ने अपना तीर छोड़ा, कंचन ने माँ की मजबूरी समझी और इस पर विचार किया तो शादी के लिए हाँ कर दी और कहा मैं तभी करूंगों जब शादी के बाद मोये पढने दियो जायेगो और इस प्रकार कंचन की शादी हो गई। शादी के बाद कंचन ने इंजीनियरिंग डिप्लोमा में दाखिला ले आगे की पढ़ाई की। तीन बच्चे होने तक कंचन की कहीं नौकरी नहीं लगी। परिवार बढ़ने के साथ-साथ खर्चे भी बढ़े। हालात और भी खराब हो गये। बीमार पिता, बूढ़ी माँ, एक अपाहिज भाई, दूसरा बेकार, आमदनी का कोई जरिया नहीं था। सारी जिम्मेदारी रामबती की थी। कभी-कभी कंचन को नक्शे बनाने का काम मिल जाता तो कुछ पैसे मिल जाते तो कभी नहीं मिलता जैसे-तैसे जिंदगी की गाड़ी के दिन विकट गरीबी में दिन गुजर रहे थे, लेकिन कंचन ने हार नहीं मानी और नौकरी के लिए फार्म भरता रहा।

तीन बच्चों के बाद कंचन को सरकारी नौकरी मिली। घर में उम्मीदों के बादल मंड़राने लगे। सभी लोग बड़े खुश थे रामबती की खुशी का ठिकाना न था, उधार लेकर पूरी बस्ती में लड्डू बांट दिये, 'भईया की नौकरी लग गईये। अब तो हमारै दिन फिर जागें।' कंचन को नौकरी के लिए दूसरे शहर जाना था इससे माँ का मन उदास हो गया। पहली बार बेटा घर से दूर जायेगा माँ चिंतित हो गई, मन में विचार उठने लगे, 'केसी जगह होयगी, केसे लोग हौगें माँपे, रोटी टैम पे मिलेगी के नाए, वहाँ रोटी को बना के दैगो।' रामबती बेटे से बिछड़ने की सोचकर ही रोने लगी, तब कंचन ने समझाया, 'अम्मा मैं नौकरी पे जा रोंउ, कंऊ लाम पे ना जारो मैं, जो तू रोरई, ए नौकरी पे जा रोऊ।' कंचन दूसरे शहर जाकर नौकरी करने लगे लेकिन तनख्वाह इतनी नहीं थी कि अकेले कंचन के दम पे घर चलने लगे, सभी की जरूरतें पूरी की जा सकें। कंचन की नौकरी लगते ही रामबती ने अब चुन्नी की ब्याह की टेर लगा दी और उसके लिए लड़की देखने लगी, सबने मना भी किया कि अभी चुन्नी कुछ कमाता-धमाता तो है नहीं, शादी के बाद अपनी बहू को क्या खिलाएगा।' रामबती जल्दी से जल्दी श्बाादी करके अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहती थी। सो रामबती की खोज विद्या पर जाकर खत्म हुई।

विद्या अपने परिवार में पाँच बहनों में दूसरे नंबर पर थी। पिता की मृत्यु बचपन में ही हो इसलिए पूरे परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी का बोझ माँ केलासो पर था। यहाँ भी गरीबी ने डेरा डाल रखा था। विद्या पढ़ी-लिखी भी नहीं थी, लेकिन सुंदर, गोरी और लंबी खूब थी। माँ कैलासो लकड़ी कोयले की टाल लगाती थी। उसकी आमदनी से परिवार का गुजारा भी मुश्किल से होता था। विद्या की बड़ी बहन अँगूरी भी अपने पति रामप्रसाद के साथ वहीं माँ के घर आकर रहने लगी थी। इस प्रकार खर्चे भी ज्यादा बढ़ गये थे। बड़ी होतीं बेटियों को देख केलासो जल्दी से जल्दी उनकी शादी कर अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहती थी। उसने विद्या के लिए लड़के की तलाश शुरू कर दी। वैसे भी गांव-देहात में पिता-भाई का न होना भी बेटियों के लिए अभिशाप माना जाता है, जिसके कारण विद्या की शादी में विलम्ब हो रहा था। गरीबी, एकली महिला और पाँच बेटियों का भविष्य माँ केलासो के लिए चिंता का सबब बना हुआ था वह जल्दी से जल्दी विद्या के हाथ पीले कर अपने घर विदा कर देना चाहती थी ताकि दूसरी बेटियों के बारे में भी सोच सके।

अट्ठारह-उन्नीस साल की विद्या का यौवन पूरे निखार पर था। केलासों।

वर की तलाश में चिंतित थी क्योंकि दलित समाज में अशिक्षा, अज्ञानता, बेरोजगारी, अस्पृश्यता, युवा वर्ग की बेबसी बन उन्हें शराब व अन्य नशे की ओर धकेल देती है जिसका खामियाजा ज्यादातर परिवार में पत्नी और बच्चों को भुगतना पड़ता है। विद्या के साथ भी ऐसा ही हुआ, चुन्नी बुरी संगत और परिवार में किसी के ध्यान न देने के कारण शराब, जुआ व अन्य तरह की बुरी आदतों का शिकार हो गया। वैसे भी पहले परिवार देखकर ही शादी कर दिया करते थे। विद्या की माँ केलासो ने भी केवल चुन्नी लाल का परिवार देखा और देखकर ही बेटी की शादी कर दी। शादी के बाद कैसे रहती है ये उसका नसीब। केलासो ने दस-पंद्रह लोगों की बारात बुला कर विद्या की शादी चुन्नी लाल से कर अपने घर से विदा कर दिया। साथ ही माँ ने बेटी को नसीहत भी दे दी, 'लाली अब तो तेरो बोई घरए, यां तो अब तू मेहमानन की तरह आयेगी और फिर सासरे चली जायेगी, सासरे में काई कोई जवाब मत दईओ, सबको आदर भाव करीयो, मायके की नाक मत कटवईयो।' और माँ की नसीहतों की गठरी बांध विद्या अपने सासरे आ गई, जहाँ उसकी मुलाकात सास रामबती, ससुर कुंदन लाल, जेठ कंचन, जेठानी संतोष, बड़ी बेटी पारो और उसके छोटे बहन-भाई से हुई। पारो उस समय केवल 4-5 साल की थी।

रंगीन, सुनहरे सपनों के साथ विद्या ने चुन्नी लाल की जीवन संगिनी के रूप में अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ अपने जीवन की शुरुआत की। परिवार के साथ घर के खर्च भी बढ़े। चुन्नी बेरोजगार था। बूढ़े माँ-बाप या कंचन चुन्नी के परिवार को कब तक चला पाते। खर्च को लेकर घर में झगड़े होने लगे लेकिन विद्या कभी बीच में नहीं बोली। जुबान होते हुए भी जैसे गूंगी हो कभी उसकी आवाज नहीं सुनी। पति को बोलती होगी तो अंदर कमरे में, सबके सामने कभी जवाब नहीं दिया। माँ रामबती ने कुंदन लाल के कहने पर उसे हरबिलास के पास लेकर गई, उसने प्रार्थना की, 'भईया हमारे चुन्नी कूं अपने पास बैठा के, जाए भी जूता बनानो सिखा देओ। जाते जे अपने बच्चन ने पाल सके।' हरबिलास जूते बनाने का काम करता था और चुन्नी हरबिलास के पास जूते बनाने का काम सीखने लगा लेकिन वहाँ से उसे कोई खर्चा पानी नहीं मिलता था। कंचन जब छुट्टियों में घर आया तो उसने चुन्नी से अपनी दुकान खोलकर देने की बात की। चुन्नी अपनी दुकान खोलने के लिए राजी हो गया। कंचन ने दो अपर सीने करने के लिए लेकर दे दिये लेकिन चुन्नी काम शुरू करने से पहले अपने उस्ताद हरबिलास को सम्मान देने के लिए उस्तादी शागिर्दी करना चाहता था। सबने मना किया कि पहले दुकान चल जाए, 'तो उस्तादी कर लेना। चुन्नी अड़ गया, 'नहीं मैं तो पेले अपने उस्ताद की काम सीखने की खुशी में उस्तादी-सागिर्दी करूंगो, फिर काम शुरू करूंगों।' उस्तादी-सागिर्दी करने के लिए साहूकार से ब्याज पर उधार लिया। कुछ विद्या के गहने बेचे। विद्या ने भी कोई विरोध नहीं किया और मूक बनी रही। इसी आशा में शायद पति का काम चल जायेगा तो गहने तो बाद में भी बन जायेंगें। सबके विरोध के बावजूद चुन्नी ने उस्तादी शागिर्दी में पूरी बस्ती को न्योता दिया। पंडित जी को बुलाकर दुकान में यज्ञ-हवन करवाया। उस्ताद के लिए चार आने भर की अंगूठी बनवाई, पांचों कपड़े, हरबिलास की पत्नी के लिए साड़ी, और भोज में पंचमेल मिठाई सब लोग बहुत खुश हुए, सबने बहुत तारीफ की, 'भईया ऐसी उस्तादी सार्गिदी कऊं नई देखी होगी। चुन्नी ने तो कमाल कर दो। आखिर बाको भईया सरकारी नौकरी में जोए।' उस्ताद और बस्ती वालों ने चुन्नी को पानी पर रख दिया। इससे चुन्नी लाल झूठी शान के चक्कर में साहूकार अनोखे लाल के कर्जदार हो गए।

काम शुरू किया दुकान पर बैठे लेकिन काम में मन कैसे लगे। दो-चार दिन में एकाध जोड़ी बनती उसे बेच कर बादशाह बन जाते और फिर दोस्तों संग दारू और मीट की दावत चलती, दुकान का माल खत्म होने लगा। अब और माल खरीदने के लिए पैसे कहां से आएं? दोस्तों की संगत छूटती नहीं। दुकान ठप्प हो गई। नशे ने चुन्नी लाल को जकड़ लिया। डर के मारे घर आना बंद कर दिया। डर लगता, सोचते, 'अगर भाई ने पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा।' आते तो देर रात, जब सब सो जाते। अपनी जिम्मेदारियों से मुँह छुपाने लगे। विद्या कभी बच्चों का वास्ता देती, कभी घर के खर्च के लिए पैसे माँगती, 'बच्चा भूकेंएं, आटो खत्म है गयो।' नशे में धुत्त, चुन्नी लड़ाई करता-मारता लेकिन विद्या की आवाज कभी कमरे से बाहर सुनाई नहीं पड़ी। बस रोती रहती, बाहर से रामबती चिल्लाती, 'नाशपीटे एक तो मूत पीके आयोए, ऊपर ते बा गऊए मार रयोए, तोए सरम तो आतनाएं, बच्चा के दिना ते भूकेंएं, इनैं को पा लेगो।' लेकिन विद्या

की आवाज कभी नहीं सुनी जैसे उसके मुँह में जुबान ही न हो। हाँ उसकी सूजी हुई और लाल-लाल आंखे जरूर अगली सुबह चुगली करती-सी दिखती कि उसके पति ने रात भर उसके साथ कितना जुल्म किया है। कभी-कभी उसके बुदबुदाते होंठ उसके दुखों को बयां कर जाते। इन्हीं परिस्थितियों में रहते-रहते विद्या पांच बच्चों की माँ बन गई थी। घर में अब खाने के लाले पड़े थे। घर के काम से फुर्सत पाकर विद्या घर में ही लोहे के तार के ब्रुश बनाने का काम करने लगी, जिसमें उसे साइज के हिसाब से चार आने, आठ आने, बारह आने प्रत्येक एक दर्जन के हिसाब से मिलते। पूरी बस्ती यही काम करती, तो विद्या भी यही काम करने लगी। यह काम घर में बैठे-बैठे ही हो जाता था इसके लिए कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता। कई बार तार खींचते हाथ की उंगलियाँ कट जातीं, तार की छीजन पैरों में चुभने पर जख्म तक बन जाते। बारिश में घर की छत से जगह-जगह पानी टपकता, जिससे ओढ़ने-बिछाने के सभी कपड़े गीले हो जाते। टपकते पानी के नीचे कहीं बाल्टी लगाते, कहीं भगोना तो कहीं लोटा तो कहीं पीपा जिनमें भर-भर कर पानी बाहर उलीचते। ऐसे ही हालातों में विद्या और चुन्नी की गृहस्थी की गाड़ी चल रही थी लेकिन उस छोटी-सी आमदनी में विद्या अपने बच्चों को पेट भर खाना भी नहीं खिला पाती थी। कभी-कभी तो विद्या पारो के हाथ पर चार आने रख कर कहती, 'लाली बाजार ते चार आना की सूजी ला दै आज रोटी बनावे कूं आटो नाए खत्म है गयो ए' और चार आने की सूजी नमक के पानी में घोल कर बच्चों को पिलाकर सुला देती। कभी खाली नमक की रोटी भी मिल जाती तो कहती, 'आज तो नौन रोटी मिल गई।' उन्हें लगता जैसे दावत गई। चुन्नी लाल इन सबसे बेखबर रहता। घर में क्या हो रहा है। किस चीज की जरूरत है। कोई मतलब नहीं था। खर्चे के लिए पैसे माँगने पर मार-पिटाई और क्लेश रोज की दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। नशे में उसे खुद के खाने का भी होश नहीं रहता था। पूरी-पूरी रात दारू के नशे में सड़कों पर घूमना, शोर मचाना, गाली बकते हुए चलना, पीछे-पीछे बूढ़ी माँ रामबती बेटे को घर लाने के लिए धक्के खाती घूमती, 'बेटा घर चल! रात जादा है गई। बऊ घर में तेरी बाट देख रईए।' कभी किसी से झगड़ाकर थाने में बैठा होने की खबर पर, भागी थाने जाती और पुलिस के सामने हाथ जोड़ती, गिड़गिड़ाती, 'बाऊ जी जाए छोड़ दैओ, अब नयी करैगो। साब मैं जाए समझा दऊंगीं। साब जाके छोटे-छोटे बच्चाएं। साब गरीब आदमीएं।' और पुलिसवाले माँ को हिदायत देकर उसे छोड़ देते।

गरीबी-तंगी और पति की अनदेखी से बदहाल जिंदगी से विद्या के जीवन में घुन लगा दिया। विद्या बीमार रहने लगी, बच्चे भी कुपोषण के शिकार हो गये। सूखा शरीर, बड़ा-सा पेट, सारा दिन सुस्ती में पड़े रहते। इन हालातों में किसी भी बच्चे ने शिक्षा नहीं पाई हालांकि पारो ने जो उस समय स्वयं दस बारह साल की होगी, उन्हें सरकारी स्कूल में ले जाकर दाखिला करवाया। उन्हें घर में भी पढ़ाने के लिए लेकर बैठती, उनकी देखभाल करती, तीज-त्योहार पर उनके स्वयं कपड़े सिलकर पहनाती, क्योंकि उसके मम्मी-पापा केवल होली दीवाली पर ही घर आते थे, तो वह अपने पाँच बहन-भाईयों की भी देखभाल की जिम्मेदारी भी पारो की ही थी, इसलिए अपनी पढ़ाई के साथ-साथ पारो घर के कामों में दादी की मदद भी करती थी।

माँ-बाप की अज्ञानता, शिक्षा के प्रति असंवेदनशीलता और अभाव से भरी जिंदगी, पहले पेट भरने के साधन तलाशती है और यही विद्या के साथ भी हुआ। बच्चों की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं बनी। विद्या की बीमारी ने धीरे-धीरे टी.बी. का रूप ले लिया। न दवा, न इलाज और न समय पर भरपेट खाना। विद्या तिल-तिलकर मौत की ओर बढ़ रही थी। कंचन जब छुट्टियों में घर आया तो उसने बच्चों की हालत देखी और चुन्नी के लिए एक बार फिर काम पर लगाने का प्रयास किया। उसे सरकारी दूध के बूथ पर नौकरी लगाने के लिए कहा, चुन्नी से उसके लिए साफ मना कर दिया, 'हैं! मैं, जै काम करूंगो। मोए ना करनो जै काम।' कंचन ने उससे ऑटो रिक्शा चलाने के लिए कहा और कंचन ने कुछ अपनी जमा पूंजी से कुछ उधार लेकर किश्तों पर चुन्नी को ऑटो रिक्शा लेकर दे दिया, ताकि चुन्नी अपने बच्चों का भरण-पोषण कर सके। चुन्नी को नशे की इतनी लत्त लग चुकी थी कि वह बिना नशे के रह ही नहीं सकता था। शराब की लत जिसको लग जाती है उसे बर्बाद करके ही छोड़ती है। ऐसा ही चुन्नी लाल के साथ भी हुआ। चुन्नी जब भी ऑटो लेकर निकलता, तभी या तो कोई एक्सीडेंट हो जाता या पुलिस चालान करके आता। चुन्नी लाल कभी उसकी एक भी किश्त न चुका पाया और कहने लगा, 'मोए ना लोयौ फलो नाए मेरे लिए तो जै पनोती बन गयोए, रोज रोज गाड़ी कऊं ना कऊं लग जातए,

मेरे सबरे हात पांम उटूट गए।' कंचन भी रोज-रोज के एक्सीडेंट, पुलिस चालान, और गाड़ी जप्ती से परेशान हो गया था। गाड़ी कंचन के नाम थी, इसलिए एक साल के अंदर-अंदर गाड़ी को बेचना पड़ा और चुन्नी एक बार फिर बेरोजगार हो गया। अब वह बाबाओं की टोली में जाने लगा और वहाँ अन्य तरह के नशे सुलफा, गांजा, चरस, जैसे नशे भी करने लगा। विद्या बच्चों की भूख से विकल हो जाती और अपनी किस्मत को कोसती, काल्पनिक भगवान को गालियाँ देती, 'नासपीटे ने मोए निकम्में आदमी के पल्ले बांध दयोऐ, जो न भरपेट रोटी दै सकत, ना चैन की जिंदगी। जीन देत रोजिना की मेरी जान कूं कलेस और करे हैए। भगवान अगर तू कऊं है तो मोए मौत दे दे। रोजिना के कलेस तै मैं भौत तंग आ गई ऊं।' विद्या की आँख में आँसुओं से भर जाती। विद्या अब ज्यादा बीमार रहने लगी थी। घर में जो ब्रुश बनाने का काम करती थी, वह भी अब उससे नहीं होता था, जिससे दो वक्त की रोटी का जुगाड़ हो सके। पारो कंचन की बेटी, जो अब तेरह-चौदह साल की हो गई थी, अपने स्कूल जाने के तांगे के लिए मिलने वाले पैसे जोड़कर कभी राशन भरवा देती, कभी बच्चों के लिए कपड़ा लाकर उन्हें सिलकर पहना देती। कभी विद्या के साथ जाकर दवाई दिलवा लाती। कभी-कभी तो अपने हिस्से की रोटी दुपट्टे में छुपाकर लाती और चुपचाप चाची की झोली में डाल जाती ताकि विद्या बच्चों को कुछ खिला सके। चोरी पकड़े जाने पर पारो अपनी माँ से मार भी खाती थी, लेकिन ऐसा कब तक चलता। न ही इससे विद्या और बच्चों का जीवन बसर होता, न ही इससे जरूरत पूरी हो पाती। विद्या चुन्नी से पैसे माँगती, 'आज ऑटो नाए बच्चा भूंकेएं पईसा दै दैओ तो मैं सौदा सट्टों ले आऊं।' लेकिन चुन्नी के पास पैसे हों तो दे, गुस्सा और आ जाता, मार पिटाई और झगड़ा कर अपनी खीज विद्या पर उतारता। विद्या भी रोज-रोज की पिटाई और भुखमरी से इतनी आहत हो गई थी कि सावन में त्योहार के बहाने से मायके चली गई और वचन भर के गई कि जब तक बो मोए कमा के नयी दिगें और घर का खर्च चलाने के काबिल नाए होत, तब तक मैं मायके ते वापिस नहीं आऊंगी। विद्या मायके चली गई। इसी उहापोह में बच्चों का स्कूल भी छूट गया। नानी के घर भी ना भरपेट खाने को, ना उन्हें स्कूल भेज कर पढ़ाने में किसी को रुचि। एक कहावत है ना—आसमान से गिरा, खजूर में अटका। विद्या की माँ के घर की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। वहाँ भी फाके पड़े रहते। जहाँ विद्या के अलावा चार और बहनें थी। विद्या के पाँच बच्चे। छोटी-सी कोठरी और इतना बड़ा परिवार, उसमें समा नहीं पाते, इसलिए विद्या अपने बच्चों के साथ लकड़ी कोयले की टाल में ही पड़ी रहने लगी। टाल का सारा काम माल लाना, बेचना, खरीदना, पैसों का लेन देन, खर्चा, सब विद्या की बड़ी बहन अंगूरी के हाथ में था। परिवार पर उसी का वर्चस्व था, क्योंकि विद्या की कोई आमदनी नहीं थी, इसलिए वहाँ भी विद्या से कोई ढ़ंग से बात तक नहीं करता था। सभी बहनें कोसतीं, 'अपने आदमीएं छोड ़के यां पड़ी, पिल्लन नै ले के, यां इन्हें बैठार के को खबायेगो।' मजबूरी में विद्या चुपचाप सबकी सुनती रहती। ऐसे तानों के बीच उसका घर जाने का भी मन नहीं करता और अपने बच्चों के साथ टाल पर ही पड़ी रहती। वहाँ भी वह भूख और बीमारी से जूझती-कुढ़ती रही। स्वाभिमानी विद्या ना तो स्वयं पति के पास वापस आई और ना ही चुन्नी उसे लेने के लिए गया। चुन्नी का विद्या को अपने पास लाने का मतलब था परिवार की जिम्मेदारियों को उठाना जिसमें सक्षम नहीं था। माँ रामबती ने कई-बार कहा भी, 'चुन्नी जाके बऊए लिवा ला बच्चन की पढ़ाई मारी जा रईए।' चुन्नी अपनी जिम्मेदारियों से भागता रहा। नशे का आदी चुन्नी लाल नशे में इतना धुत्त रहता कि उसे अपना ही होश न रहता। विद्या टाल पर रहती थी, जहाँ उसके बच्चों के अलावा कोई न होता था, जहाँ केवल लकड़ी की बास और कोयले की कालिख के साथ एक चारपाई के नाम पर एक तख्त था, जिसे पर एक गुदड़ी-सी पड़ी थी, वही उसका बिछावन और औढ़ना था, जिसपर बैठकर दिन में दुकानदारी होती थी, वही रात में विद्या और उसके बच्चों का बिस्तर। विद्या की स्थिति ऐसी भी नहीं थी कि घर जाकर खाना-पीना खा आती। वहीं पर अगर उसे कुछ भेज देता तो खा लिया, वरना भूखे ही पड़ी रहती। खुद्दारी उसे वहाँ जाने से रोकती रही। उसने कभी किसी से कोई शिकायत न थी, न ही किसी से कभी कुछ माँग। उसे परिस्थितियों से जूझना मंजूर था, लेकिन झुकना नहीं। अभाव में भी वह न तो चुन्नी लाल के आगे झुकी, न ही अपनी बहनों से कोई मदद माँगी, जो मिल गया, उसी में सबर करना, उसकी मजबूरी थी। अभावग्रस्त जीवन और बीमारी से वह अकेली विद्या कब तक जूझती, आखिर एक दिन उसी लकड़ी व कोयल की टाल में विद्या जीवन की

उन्नसवी सदी में सावित्री बाई कहती है

मूल मराठी पाठ

स्वातंत्र्य मिळे न सोपे, ज्ञानाविण गती नाही।
शुद्रातिशुद्र अज्ञानी, दु:खाचे डोंगर पाही॥
विद्या मिळवा आता, कष्ट सोसावे लागती।
शूद्रांच्या उद्धारासाठी, ज्ञानाचीच गती॥
उठा, जागे व्हा, कंबर कसा।
आता हातात लेखणी धरा, अज्ञान दूर करा॥

हिंदी अनुवाद

स्वतंत्रता इतनी आसान नहीं, ज्ञान के बिना कोई प्रगति नहीं।
शूद्र और अति-शूद्र अज्ञानी रह गए, इसीलिए दुखों का पहाड़ सहा है।।
अब विद्या प्राप्त करो, चाहे इसके लिए कष्ट सहने पड़ें।
शूद्रों के उद्धार के लिए, ज्ञान ही एकमात्र रास्ता है।।
उठो, जागो और कमर कस लो।
अब हाथ में कलम थाम लो, और अज्ञानता को दूर भगाओ।।

जंग हार गई और न जाने रात के कौन-सी पहर में सोते हुए विद्या ने कब अपने प्राण त्याग दिये। यह भी किसी को नहीं पता चला। अगली सुबह जब विद्या की माँ केलासो खाना लेकर आई तो दुकान खोलने पर पता चला कि वहाँ विद्या नहीं, विद्या की लाश पड़ी थी। विद्या मर चुकी थी और मरी हुई विद्या के स्तनों से उसका छह महीने का बेटा उसके स्तनों से चिपका अपनी भूख मिटाने का प्रयास कर रहा था। केलासो ने यह देखा तो विद्या को हिला -ढुलाकर, उसे जगाने का प्रयास किया। शायद विद्या गहरी नींद में हो। माँ का मन यकीन करने को तैयार न था, वह आवाज लगा रही थी, 'विद्या! ओ विद्या! उठ! लाला कूं भूंक लगीए जाए, रोटी खबा दे।' लेकिन वहाँ कोई हरकत न हुई। वहाँ तो केवल विद्या का बेजान शरीर था, जिससे उसका बेटा चिपका हुआ, जो भूख के साथ-साथ मासूम आँखों से अपनी माँ को तलाश रहा था, जो अब वहाँ नहीं। नानी केलासों ने उसे स्तनों से छुड़ाकर अलग किया। अभागी विद्या को तन के साथ-साथ मन की जिम्मेदारियों से भी मुक्ति मिल गई। बेपरवाह रहने वाला चुन्नी, पत्नी की मौत से टूट गया। अब उसे अपने बच्चों का भविष्य की चिंता होने लगी क्योंकि अब विद्या तो रही नहीं। बेटी के साथ-साथ बच्चों के प्रति नानी की जिम्मेदारी भी खत्म हो गई।

चुन्नी लाल बच्चों को लेकर दिल्ली आ गया, जहाँ बच्चों को संभालने की सारी जिम्मेदारी चुन्नी की 70 साल की माँ रामबती पर आ गई, अभावपूर्ण अभिशप्त जीवन से मुक्ति न मिली। विद्या अपने बच्चों को उसी मोड़ पर छोड़ गई, जहाँ से उसने स्वयं की जिंदगी की शुरुआत की थी।

आखिर गरीबी, अशिक्षा और नशे की लत्त, परिवार को समय से पहले ही खत्म कर देती है। अशिक्षा व अज्ञानता के अभाव में व्यक्ति इतना कुंठित हो जाता है कि वह अपनी जिम्मेदारियों से भी भागने लगता है। अगर चुन्नी ने समय रहते शिक्षा के महत्व को समझा होता और अपने भाई कंचन के द्वारा समय-समय पर की गई मदद का लाभ उठाया होता, तो आज बच्चों और परिवार को अच्छा और खुशहाल जीवन दे सकता था। चुन्नी लाल ने कभी कोशिश ही नहीं की। पारो दादी के साथ मिल कर बच्चों की परवरिश में मदद करती रही और अपनी पढ़ाई के साथ-साथ पाँच बहन-भाई अपने और पाँच चुन्नी और विद्या के बच्चे जिनकी जिम्मेदारी घर में केवल दादी रामबती और पोती पारो की थी। क्योंकि पारो के मम्मी-पापा भी काम के चक्कर में दूसरे शहर में रहते थे। चाची के मरने के बाद चाचा संन्यासी हो गये थे। कई-कई दिनों तक घर नहीं आना, बाबाओं के साथ कभी बदरी नाथ, कभी केदारनाथ, कभी किसी मंदिर, कभी किसी में, वहीं रहना, वहीं खाना, कभी मन किया तो किसी दिन कमा कर ले आया, कभी नहीं। दादी रात-रात भर ब्रुश बनाने का काम करती, 'लाली आज इतनै दर्जन ब्रुश बनानै हैं तो कछु पईसा मिल जांगे तो रासन ले आऊंगी।' पारो भी दादी की मदद में लग जाती और जल्दी से जल्दी काम को पूरा करने का प्रयत्न करतीं जबकि आर्थिक उपार्जन करना चुन्नी की जिम्मेदारी थी। शराब और अन्य प्रकार के नशे ने उन्हें इसके प्रति कभी सचेत ही नहीं रहने दिया और यह नशा एक दिन उन्हें भी खा गया। आर्थिक स्थिति वहीं की वहीं रही। अभावों से जूझते हुए अगली पीढ़ी भी उसी प्रकार की परिस्थितियों में अपना जीवन गुजारती रही। चुन्नी ने अपनी अगली पीढ़ी को विरासत में वही सौगात दी, उनका जीवन भी उसी राह पर चल पड़ा जिस पर चलकर चुन्नी का जीवन बर्बाद हुआ था।❑